ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 32

2019

A PEER REVIEWED JOURNAL OF THE MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava Prof. Vandana Gupta

Journal of Madhya Pradesh Itihas Parishad No. 32/2019/ISSN 2231-2749

शिल्पग्रन्थों में वर्णित अर्धनारीश्वर : प्रतिमाशास्त्रीय अवलोकन

डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव
सहायक प्राध्यापक - प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व
डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय संस्कृति में अभिव्यक्ति का सशक्त रूप कला के माध्यम से हुआ। कला के इस सुदीर्घ परम्परा में संस्कृत वाङ्मय के समन्वय ने इसे ललितशिल्प के रूप में प्रतिस्थापित किया। इसके फलस्वरूप अनेक शिल्पग्रन्थों का प्रणयन हुआ। जिनमें सौन्दर्यात्मक स्वरूप, धार्मिक व आध्यात्मिक अभिव्यक्ति, वैचारिक विशिष्टता, परम्पराओं के साथ-साथ धार्मिक सहिष्णुता का समन्वयवादी स्वरूप भी दृष्टिगत होता है। प्राचीन भारतीय समाज में विविध धार्मिक मतमतान्तरों के बीच सद्भावना को प्रेषित करने के लिये समाज के विभिन्न वर्गों के अतिरिक्त संस्कृत आचार्य एवं शिल्पकारों ने भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। अर्धनारीश्वर प्रतिमा का अंकन इसी धार्मिक सहिष्णुता की परिणति है, जिनके निर्माण का मुख्य आधार शैव एवं शाक्त सम्प्रदायों में धार्मिक समन्वय एवं एकात्मकता को दर्शाता है।

भारतीय कला में धार्मिक सहिष्णुता एवं समन्वय का प्रत्यक्ष प्रमाण अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं में देखने को मिलता है। अर्धनारीश्वर प्रतिमाएँ स्थानक तथा आसनस्थ दोनों प्रकार की मिलती हैं। शिल्पग्रन्थों में शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप के अन्तर्गत शरीर का आधा दाहिना भाग पुरुष का तथा आधा बायाँ भाग स्त्री का होगा। इन प्रतिमाओं में शिव को सदा प्रथम और दाहिनें भाग में तथा पार्वती को बराबर के बायें भाग में दर्शाया जाता है। अर्धनारीश्वर प्रतिमा का निर्माण सदैव इसी रूपांकन में हुआ है। इस प्रकार अर्धनारीश्वर के संयुक्त प्रतिमा में शिव और शक्ति (पार्वती) का ऐक्य एक शरीर के दो भागों रूप में हुआ हैं, जो समष्टि रूप में शिव और शक्ति (पार्वती) के एक होने का भाव प्रदर्शित करता है। भारतीय कला में अर्धनारीश्वर प्रतिमा का प्रारम्भ कुषाण काल से मिलना प्रारम्भ हो जाता है, जिसकी नैरन्तर्यता मध्यकाल तक बनी रही। ये प्रतिमाएँ उत्तर तथा दक्षिण भारत के विभिन्न स्थलों से प्राप्त होती हैं। भारतीय कला, धर्म, दर्शन एवं संस्कृति के सौन्दर्यबोध का समग्रतापूर्वक समागम अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं में दिखलायी देता है।

प्रस्तुत शोध पत्र शिल्पग्रन्थों में वर्णित अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं के विविध पक्षों के अध्ययन पर आधारित है। अर्धनारीश्वर का उल्लेख विभिन्न शिल्पग्रन्थों, पुराणों, मुद्राओं, मुहरों एवं अभिलेखों में मिलता है। प्रस्तुत शोध पत्र में शिल्पशास्त्रीय ग्रन्थों के आधार पर अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं के शारीरिक, अलंकारिक व कलात्मक पक्षों के साथ-साथ धार्मिक, सामाजिक एवं दार्शनिक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला गया है।

संस्कृत वाङ्मय में अर्धनारीश्वर

यह प्रतिमा शैवो के सोम सिद्धांत व कापालिक सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। इन सम्प्रदायों में शिव व पार्वती दोनों को बड़ा महत्व दिया गया है। सोमसिद्धांत के अनुसार यह समस्त जगत शिव व पार्वती के लीला

की प्रतिच्छाया है, जबकि कापालिक सम्प्रदाय के अनुसार प्रत्येक स्त्री पुरूष में शिव व पार्वती विद्यमान रहते हैं। शिव का एक ऐसा रूप है जो कि शैव व शाक्त धर्म में एकता स्थापित करता है।[1] शिव पुराण में शिव एवं पार्वती के संयुक्त होने की कथा मिलती है। इसके अनुसार सृष्टि की वृद्धि से असंतुष्ट ब्रह्मा ने शिव की तपस्या की। ब्रह्मा की तपस्या से प्रसन्न होकर शिव अर्धनारीश्वर रूप में प्रकट हुये। शिव के इस रूप को देखकर ब्रह्मा ने शक्ति की रचना न करने की भूल की और शिव से शक्ति की रचना की प्रार्थना की। ब्रह्मा की प्रार्थना पर शिव ने अपने वाम भाग से शक्ति को उत्पन्न किया।[2] एक दूसरी कथा के अनुसार शिव भक्त भृंगी द्वारा शिव के सम्मानार्थ केवल शिव की ही परिक्रमा करने पर पार्वती द्वारा भृंगी को कंकाल स्वरूप होने का श्राप दिया। इस श्राप के कारण ऋषि स्वयं अपने पैरों पर खड़े होने में असमर्थ हो गये। इसके फलस्वरूप शिव द्वारा भक्त पर कृपा करके उसे तीसरा पग प्रदान करना और देवी के सम्मानार्थ उन्हें अपने (शिव के) के वाम भाग में संयुक्त करना ही अर्धनारीश्वर स्वरूप का कारण बना।[3]

अर्धनारीश्वर प्रतिमा के निर्माण का एक प्रयोजन शैव और शाक्त सम्प्रदाय के मध्य एकता की प्रतिष्ठा है वहीं शैव और शाक्तों के मध्य अपने अपने पंथ को श्रेष्ठ सिद्ध करने की प्रतिस्पर्धा भी है। कालान्तर में इस प्रतिस्पर्धामुक्ति के लिए अर्धनारीश्वर की कल्पना की गयी जिसमें न कोई किसी से कम है ना ज्यादा, दायाँ अर्द्धशिव का और वाम शक्ति का है।[4] अर्धनारीश्वर रूप में शिव स्त्री और पुरुष एकता की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यही साम्यावस्था है। यही समत्व वास्तविक योग है।

अर्धनारीश्वर का प्रतिमा विधान

भारतीय शिल्पग्रन्थों में शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप का लाक्षणिक विवरण विष्णुधर्मोत्तरपुराण, शिल्परत्न, अपराजितपृच्छा, देवतामूर्तिप्रकरण, मानसोल्लास, मयमतम, मत्स्यपुराण और स्कन्दपुराण आदि में मिलता है।

विष्णुधर्मोत्तरपुराण

विष्णुधर्मोत्तरपुराण में अर्धनारीश्वर रूप को गौरीश्वर कहा गया है और इस प्रतिमा को चतुर्भुज बनाने का निर्देश दिया गया है। इसमें बताया गया है कि देवता का आधा भाग नारी का और आधा भाग पुरुष का होना चाहिए। आधे भाग में शिव से सम्बन्धित अलंकरण तथा जटाभार, सर्प, यज्ञोपवीत, मेखला, त्रिशूल आदि तथा आधे भाग में इन्दीवर, दर्पण आदि स्त्रियोचित आभरण प्रदर्शित किये जाने चाहिए अथवा ताड़पत्र और वाम कर्ण में कुण्डल प्रदर्शित हों।[5] इस प्रतिमा में अर्धनारीश्वर रूप में प्रकृति को महत् पुरुष से अभिन्न - अभेद रूप में दिखाया जाता है।[6] इस ग्रन्थ में अर्धनारीश्वर का वर्णन ईशान (दिक्पाल) के रूप में हुआ है।[7]

अपराजितपृच्छा

इस ग्रन्थ में कहा गया है कि अर्धनारीश्वर प्रतिमा में शिव और वामार्ध में उमादेवी के लक्षण होते हैं। शिव अपने शरीर के आधे भाग में उमा-पार्वती को धारण किये होते हैं। इस प्रतिमा के बायें भाग में स्त्री की भाँति स्तन होंगे और कानों में ताड़पत्र (पत्रियाँ) अथवा बायें कान में बाली और दाहिने कान में कुण्डल होंगे। बायें मुकुट का आधा भाग माणिक्यादि से जड़ित होगा तथा आधा दाहिना भाग जटाभार होगा। अर्धनारीश्वर की प्रतिमा में वामांग नारी रूप में समस्त आभूषणों से विभूषित होगा। दाहिना भाग पुरुषांग होगा जिसे कपाल और कटि में मेखला से युक्त किया जायेगा। दाहिने हाथों में क्रमशः त्रिशूल और अक्षसूत्र धारण करवाएँ और बायें हाथों में प्रदक्षिणतः कमण्डलु एवं दर्पण हों। इसी ओर पुत्र गणेश भी होंगे।[8]

देवतामूर्तिप्रकरण

इस ग्रन्थ में कहा गया है कि अर्धनारीश्वर मूर्ति में दक्षिण भाग पुरुषरुप का होगा और वाम भाग में सस्तन नारी रुप को कल्पित किया जायेगा और कान में तालपत्र धारण करवायए जायेंगे। अथवा बायें कान में कुण्डल और दाहिने में सर्प तथा इसी अनुसार बायें भाग में जटाजूट धारण करवाया जायेगा। पूर्वोक्त अनुसार ही आधे रुप को स्त्रियों के लिये विहित आभूषणों से भूषित किया जायेगा और आधे भाग को पुरुषाकार तथा कपाल, कटिमेखला से सज्जित किया जायेगा। दाहिनी भुजाओं में त्रिशूल, अक्षसूत्र और बायीं दो भुजाओं में कमण्डलु, दर्पण के साथ ही वामभाग में गणेश को स्थित किया जाना चाहिये।[9]

शिल्परत्न में अर्धनारीश्वर के सभी हस्तायुध भिन्न हैं। अर्धनारीश्वर के दायें हाथों में से एक अभयमुद्रा में तथा दूसरा परशुधारी हो तथा हाथ की कोहनी वृषभ पर टिकी हो। बायें हाथों में से एक इन्दीवरधारी और दूसरा कटकमुद्रा में हो।[10]

बृहत्संहिता

बृहत्संहिता में शिव की बायीं तरफ आधे भाग में पार्वती की प्रतिमा को बनाने का उल्लेख है। अर्धनारीश्वर के हाथों में त्रिशूल और पिनाक तथा चन्द्रांकित जटाजूट से सुशोभित मस्तक पर अर्धनेत्र होने का उल्लेख है। साथ ही उनके वाहन वृषभ का भी उल्लेख है।[11]

मत्स्यपुराण

मत्स्यपुराण के अनुसार भी अर्धनारीश्वर प्रतिमा में शिव भाग जटाजूट, सर्पयज्ञोपवीत, त्रिशूल आदि से तथा आधा भाग सुन्दर साड़ी, केयूर, मेखला, कंकण आदि से निरूपित किया जाना चाहिए। वामचरण में नूपुर तथा आलक्तक लगा रहता है।[12] अर्धनारीश्वर के दायें हाथ में कपाल का और बायें हाथ में उत्पल का विवरण है।[13]

स्कन्दपुराण में वर्णन है कि अर्धनारीश्वर प्रतिमा के बायीं ओर मीन तथा दायीं ओर वृषभ बनाना चाहिए जो उनके वाहन हैं। इसमें अर्धनारीश्वर का वर्णन ईशान (दिक्पाल) के रूप में हुआ है।[14]

मयमतम्

मयमतम् के अनुसार अर्धनारीश्वर की मूर्ति में आधे भाग में नारी का उत्कीर्णन शुभ लक्षणों से करना चाहिये। इस मूर्ति में वाम भाग में उमा और ईश दक्षिणांग में होते हैं। दायें अर्धांग में पीत जटाजूट और विविध सज्जा होगी। बायें अर्द्धांग में उमा का धम्मिल केशविन्यास व सीमान्त तक जूड़ा हो। सिर पर तिलक और दायें कान में वासुकि का कुण्डल होगा। बायें कान में ताड़िक लटकन होगी। दायें दोनों हाथों में क्रमशः कपाल या त्रिशूल तथा परशु होंगे। उमा के बायें हाथ में कमल होगा। वह केयूर और कटकान्वित होगी। दायीं ओर यज्ञोपवीत एवं बायीं ओर अक्षसूत्र और हार होगा। बायें अर्धांग में करधनी व दायें में अग्नि होगी। उमा का अंग सस्तन होगा जबकि शिवांग में वृद्धवक्ष की संरचना (माँसलता) होगी। दक्षिणांग में शिव को व्याघ्रचर्म व उमा को कटिसूत्र तथा चित्रित वस्त्रों को धारित करवाया जाना चाहिये। उमा-महेश के पाँव समानतः कमल पर होंगे। बायें पाँव में नुपूर हैं और वह किंचित कुंचित या कुछ मुड़ा हुआ होगा। देवी की अँगुलियों को मुद्रिका में सजाया जायेगा और बायाँ पाँव भूषित होगा। ईश के चार हाथ हैं और अर्द्धांग में उमा शूक सहित होगी। ईश अपने अर्द्धांग में रक्तवर्णा हैं और उमा श्याम वर्णा हैं।[15]

मानसोल्लास

मानसोल्लास में वर्णित मूर्ति द्विभुजी है, दायाँ हाथ त्रिशूलधारी तथा बायाँ दर्पण या उत्पलयुक्त है। मानसोल्लास के अनुसार प्रतिमा का दाहिना वक्ष सपाट होना चाहिए तथा बायाँ वक्ष स्त्रियोचित उभरा हुआ होना चाहिए। दाहिनी ओर बालों की लच्छेदार लटें होनी चाहिए जबकि बायीं ओर के बाल जूड़े में बंधे होने चाहिए। दायीं और माथे के बीच अर्द्धतृतीय नेत्र होना चाहिए।[16] इस ग्रन्थ में अर्धनारीश्वर का दाहिना कर्ण वासुकि नाग से युक्त बताया गया है।[17]

अर्धनारीश्वर प्रतिमा का पुरातात्त्विक साक्ष्यः प्राचीन भारत में अर्धनारीश्वर स्वरूप के साक्ष्य पौराणिक तथा शिल्पग्रन्थों के साथ-साथ मुद्राओं, अभिलेखों एवं मूर्तिशिल्प में भी मिलता है। वैशाली से प्राप्त प्रारम्भिक गुप्त काल की एक शैव मुहर पर अंकन को डॉ. बनर्जी ने अर्धनारीश्वर प्रतिमा माना है।[18] गुर्जर प्रतिहार एवं सेन शासकों के दानपत्र एवं अभिलेखों में अर्धनारीश्वर का वर्णन मिलता है।[19] बंगाल में मध्यकाल में वल्लालसेन के नैहाटी ताम्रपत्र लेख में परममाहेश्वर की स्तुति प्रथम कुछ पंक्तियों में अर्धनारीश्वर रूप में की गयी है।[20] नैहाटी प्लेट पर नृत्य करते हुए अर्धनारीश्वर का चित्रण है। त्रिपुरी के कलचुरि शासक कर्ण के रीवा अभिलेख में शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप उल्लेख है।[21] बनारस ताम्रपत्र में भी अर्धनारीश्वर का परिज्ञान होता है।[22] भारत में लगभग सभी प्रान्तों से शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप की प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी हैं। पूर्वमध्यकाल में उत्तर प्रदेश में सारनाथ (वाराणसी), बिहार में मुण्डेश्वरी (रोहतासगढ़), सुल्तानगंज, अन्तीचक (भागलपुर), विक्रमशीला, राजस्थान में ओसियाँ, गुजरात में पाटन, पंचमहल, उड़ीसा में भुवनेश्वर व कुलों, तमीलनाडु में कांजीवरम, तंजौर, कुम्भकोणम्, मदुरै, महाराष्ट्र में एलीफेन्टा, कर्नाटक में बदामी, बंगाल में पुरावारा, श्रीनगर कश्मीर में अवन्तीपुर तथा सर्वाधिक मध्य प्रदेश में खजुराहो (छतरपुर), गोपालगंज, बीना बारह, रहली (सागर), सर्करा (गुना), तेवर व रिथि (जबलपुर), हिंगलाजगढ (मंदसौर), पालि, वछहरा (सतना), महसाँव, गुर्गी (रीवा), आशापुरी (रायसेन), निवास (मण्डला), उदयपुर (विदिशा), दोनी, नोहटा (दमोह), बरहटा (नरसिंहपुर), अन्तरा, पाली, शाहपुर, विरसिंहपुर, कोडेली (शहडोल) तथा छत्तीसगढ़ में राजीम (रायपुर) से अर्धनारीश्वर की प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी हैं।

अर्धनारीश्वर प्रतिमा का कला में अंकन हमें सर्वप्रथम मथुरा की कुषाणकालीन कला में मिलता है।[23] शिव के मुख्य विग्रहों में अर्धनारीश्वर का रूप उल्लेखनीय है।[24] मथुरा में गुप्तकाल में भी अर्धनारीश्वर रूप की प्रतिमायें लोकप्रिय रहीं। मथुरा संग्रहालय में दो अर्धनारीश्वर प्रतिमायें संग्रहित हैं।[25] इन प्रतिमाओं में शिव वाले अंग का दक्षिण भाग का हाथ अभयमुद्रा में ऊपर उठा है और पार्वती वाले वाम भाग के हाथ में दर्पण है। पुरुषभाग में जटाजूट और नारी भाग में स्तन का प्रमुख रूप से अंकन हुआ है। दोनों कर्णाभूषण तो समान हैं, किन्तु कटिमेखला में अन्तर है।[26] सारनाथ संग्रहालय में प्रदर्शित एक सर्वतोभद्र प्रतिमा में चतुर्भुज अर्धनारीश्वर के दर्शन होते हैं। परवर्ती कुषाण राजाओं की मुद्राओं में जौनपुर जिले से प्राप्त एक सुवर्णमुद्रा जो राज्य संग्रहालय की सम्पत्ति है विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस पर शिव का अर्धनारीश्वर रूप स्पष्टतया अंकित है।[27] लखनऊ राज्य संग्रहालय में अर्धनारीश्वर की एक सुन्दर प्रतिमा है। यह प्रतिमा बारहवीं शती की है। प्रतिमा चतुर्भुज, त्रिनेत्रधारी एवं समभंग मुद्रा में है। वामांग स्तनयुक्त है दायें हाथों में वरदमुद्रा के साथ अक्षसूत्र तथा त्रिशूल एवं बायें हाथों में दर्पण तथा कमण्डलु धारण किए हैं।[28] दायीं ओर जटाभार का अंकन है तथा बायें

मस्तक पर केशबंध का अंकन है। दायें अंग आभूषणों से रिक्त हैं। मूर्ति पूर्णतया शास्त्र निर्देशों के अनुरूप है। दायीं ओर वृषभ का अंकन है।

राजस्थान में अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं के साक्ष्य प्राप्त हुये हैं। झालावाड़ संग्रहालय में अर्धनारीश्वर प्रतिमा उर्ध्वलिंग और न्यून्यांकित होते हुए भी चतुर्भुज है। पैरों के पास अगल-बगल पुरुष रूप में वृषभ और मोरयुक्त कार्तिकेय बने हैं।[29] ओसियाँ[30] में अर्धनारीश्वर की तीन मूर्तियाँ संग्रहित हैं। आबानेरी[31] (दौसा जिला, राजस्थान) में भी चतुर्भुज मूर्ति मिली हैं जिनमें अधः करों में अक्षसूत्र और कमण्डलु के स्थान पर क्रमशः पद्म और कटिहस्त का प्रदर्शन है। पूर्वी बंगाल के रामपाल नामक स्थान से पाँच मील दक्षिण में पूरापाड़ा नामक गांव से अर्धनारीश्वर की एक खण्डित प्रतिमा मंदिर के ताम्रकुण्ड से मिली है जो इस समय राजशाही संग्रहालय में है। इस प्रतिमा का अधिकांश भाग टूट चुका है, किन्तु पुरुषभाग की वेशभूषा और ऊपरी भाग का अंकन इसकी पहचान कराता है। यह प्रतिमा विष्णुधर्मोत्तर में उल्लिखित गौरीशंकर रूप के अनुरूप है। यह दोभुजी है। एक हाथ कंधे तथा दूसरा कोहनी के पास से टूटा है। इसके घुटने का भाग भी टूटा है।[32] उड़ीसा के कलिंग शैली मंदिरों में भी अर्धनारीश्वर का अंकन उल्लेखनीय है।[33] परशुरामेश्वर मंदिर की एक रचना में अर्द्धनारीश्वर रूप का सामंजस्य है। इसमें नटेश शिव का वामार्द्ध स्त्री लक्षणों से युक्त है।

मध्यप्रदेश के खजुराहो से चंदेल कालीन अर्धनारीश्वर की कुल ग्यारह प्रतिमायें मंदिरों व संग्रहालयों में विद्यमान हैं। इनमें तीन मूर्तियाँ लक्ष्मण मंदिर तथा एक एक मूर्ति क्रमशः विश्वनाथ मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, कन्दरिया महादेव एवं चतुर्भुज मंदिरों पर उत्कीर्ण हैं। शेष चार मूर्तियाँ संग्रहालय में सुरक्षित हैं। खजुराहो में अर्धनारीश्वर स्वरूप की प्रतिमायें बड़ी लोकप्रिय थीं। 10वीं शती के मध्य निर्मित यह प्रतिमायें सभी प्रमुख मंदिरों पर प्रमुखता के साथ भद्र रथिकाओं एवं महामण्डप के अन्त भागों में उत्कीर्ण हैं। यह सभी प्रतिमायें मंदिर के उत्तर या दक्षिण दिशा में आकारित है जिससे उनके नियत दिशा में निरूपित किए जाने का संकेत मिलता है। खजुराहो की अर्धनारीश्वर प्रतिमायें चतुर्भुज हैं केवल एक अपवाद स्वरूप अष्टभुज है।[34] खजुराहो से प्राप्त अर्धनारीश्वर प्रतिमा में देवता को ललितासन मुद्रा में दिखाया गया है। खजुराहो की चतुर्भुज अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं के दोनों करों में क्रमशः वरदाक्ष एवं त्रिशूल तथा वामकरों में दर्पण एवं कमण्डलु हैं, दायें नन्दी एवं बायें सिंह प्रदर्शित हैं। कुछ मूर्तियों में केवल नन्दी या केवल सिंह प्रदर्शित हैं। खजुराहो के प्रवेश द्वार पर लगे प्राचीन मंदिर के ललाट बिम्ब में अर्धनारीश्वर का अंकन प्रतिमा की लोकप्रियता का प्रमाण है। अर्धनारीश्वर की कुछ चतुर्भुज प्रतिमायें नागदा से मिली हैं जिनके वाम कर में कमण्डलु के स्थान पर मातुलिंग का अंकन है। सागर विश्वविद्यालय के संग्रहालय में डाहल शैली की अर्धनारीश्वर की एक उत्कृष्ट प्रतिमा स्थापित है। एक ऊँचे पादपीठ पर ललितासन मुद्रा में प्रदर्शित इस प्रतिमा की भावभंगिमा एवं सौन्दर्य पर गुप्तयुगीन कलाधारा का अवशिष्ट प्रभाव दिखाई देता है।[35] इस प्रतिमा की सभी भुजाएँ खण्डित हैं। शिव जटामुकुट तथा पार्वती अलंकृत शिरोभूषा सज्जित हैं। आभूषणों में कर्णकुण्डल, हार, यज्ञोपवित एवं कटिवलय का अंकन है। प्रतिभा वितान पर सादा प्रभामण्डल है। प्रतिमा की मुखाकृति में सौम्यता का भाव है। इसमें उर्ध्वलिंग का अंकन किया गया है (छायाचित्र 1 : अर्धनारीश्वर, सागर, मध्यप्रदेश)।

मथुरा संग्रहालय में प्रदर्शित अर्धनारीश्वर की मृणमयी मूर्ति में बायीं ओर जटाजूट एवं दाहिनीं ओर स्त्रियोचित केशविन्यास का अंकन है। दोनों को अर्धनिमीलित सुन्दर नेत्र युक्त बनाया गया है। पार्वती को

त्रिवलय कुण्डल एवं शिव को कुण्डल युक्त कर्णाभूषण एवं गले में मोतियों की माला से सज्जित किया गया है। अर्धनारीश्वर के त्रिनेत्र को भी उकेर कर दर्शाया गया है (छायाचित्र 2 : अर्धनारीश्वर, मथुरा, उत्तरप्रदेश)।

खजुराहों की अर्धनारीश्वर की यह चतुर्भुजी प्रतिमा त्रिभंगमुद्रा में प्रदर्शित है। इनकी भुजाओं में क्रमशः वरदमुद्रा, त्रिशूल, दर्पण और कमण्डलु प्रदर्शित है। केशविन्यास में जटाजूट एवं धम्मिल दोनो ही शैलियों का प्रदर्शन है। परिकर में क्रमशः दाहिनीं एवं बायीं ओर नन्दी एवं सिंह, खट्वांगधारी उपासक-उपासिकाओं का अंकन किया गया है। अर्धनारीश्वर सभी परम्परागत आभूषणों से सज्जित हैं (छायाचित्र 3 : अर्धनारीश्वर, खजुराहो, मध्य प्रदेश)।

झालावाड, राजस्थान के शासकीय संग्रहालय (प्रतिमा क्र. 83) में प्रदर्शित अर्धनारीश्वर प्रतिमा में शिव का निचला हाथ नन्दीकेश्वर गण के मस्तक पर रखा है और ऊपर के हाथ में त्रिशूल है। पार्वती का ऊर्ध्व हाथ खण्डित है और अधः हस्त मयूरासीन कार्तिकेय के मस्तक पर है। नन्दी पुरुष रूप में तथा मोर-युक्त कार्तिकेय बने हैं (छायाचित्र 4 : अर्धनारीश्वर, झालावाड़, राजस्थान)।

उपरोक्त विवरणों से विदित होता है कि पूर्वमध्यकाल में अर्धनारीश्वर प्रतिमाओं की लोकप्रियता अपने चरम पर थी। ये प्रतिमाएँ शैव एवं शाक्त सम्प्रदायों के बीच तत्कालीन समाज की समन्वयवादी दृष्टि का परिचय देती हैं। ये सभी प्रतिमाएँ प्रतिमाशिल्प विधान की दृष्टि से कलात्मक एवं भावपूर्ण हैं। प्रारम्भ में इन प्रतिमाओं में अलंकरण का कम प्रयोग हुआ है तथा बाद की प्रतिमाओं में मूर्तिकला के विकास के साथ-साथ अलंकरण में पर्याप्त वृद्धि दिखलायी देता है।

छायाचित्र 1 : अर्धनारीश्वर, सागर,

छायाचित्र 2 : अर्धनारीश्वर, मथुरा

छायाचित्र 3 : अर्धनारीश्वर, खजुराहो

छायाचित्र 4 : अर्धनारीश्वर, झालावाड

संदर्भ

1. श्रीवास्तव, ब्रजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी, 1994, पृ. 73
2. शिवपुराण, हनुमान प्रसाद (सम्पादक), गीताप्रेस, गोरखपुर, 1978, शतरुद्रीय संहिता, 18.18
3. उपरोक्त, शिवपुराण, शतरुद्रीय संहिता, 18.48
4. बनर्जी जे. एन., द डेवलपमेंट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, द्वितीय संस्करण, कलकत्ता, 1956, पृ. 552
5. विष्णुधर्मोत्तरपुराण (कृष्णद्वैपायनव्यासकृत), प्रियबालाशाह (सम्पादक), बड़ौदा, 1958,, पृ. 177, 52.2-4, 55.9-13
6. उपरोक्त, विष्णुधर्मोरपुराण, 3, 55, 4, अभेदभिन्ना प्रकृति : पुरुषेण महाभुज
7. अवस्थी, रामाश्रय, खजुराहो की देवप्रतिमायें, आगरा, 1967, पृ. 236-37
8. अपराजितपृच्छा (भुवनदेव कृत), पोपटभाई अंबाशंकर मांकड (सम्पादक), गायकवाड़ ओरियण्टल, सीरीज, खण्ड 115, बड़ौदा, 1940, 213, 21-24
9. देवतामूर्तिप्रकरण (सूत्रधार मण्डन), उपेन्द्र मोहन सांख्यतीर्थ (सम्पादक), कलकत्ता, 1936, देवता मूर्ति प्रकरण, 6, 27-30

10. शिल्परत्न (श्रीकुमारकृत) त्रिवेन्द्रम संस्कृत सीरीज संख्या LXXV, त्रिवेन्द्रम, 1929, 2, 22, 103-105
11. बृहत्संहिता, वराहमिहिरकृत, खेमराज श्रीकृष्णदास (सम्पादक), बम्बई 1945, 58. 43
12. मत्स्यपुराण, आप्टे, एच. एन. (संपादक), पूना, 1907, 260.8-17
13. उपरोक्त, मत्स्यपुराण, 259, 1-10
14. पूर्वोक्त, अवस्थी, पृ. 236-37
15. मयमत (मयमूनिकृत) तरुवागम गणपति शास्त्री (सम्पादक), त्रिवेन्द्रम, 1919, 36, 81-89
16. मानसोल्लास (भूलोकमल्ल सोमेश्वरकृत), जी. के. श्री गोण्डेकर (सम्पादक), द्वितीय भाग, बड़ौदा ऑरियण्टल इंस्टीट्यूट, बड़ौदा, 1939, 2, 3, 1, 734-740
17. वही, मानसोल्लास, 2, 3. 1734-740
18. पूर्वोक्त, द डेवलपमेन्ट ऑफ हिन्दू आइकोनोग्राफी, पृ. 125
19. एपीग्राफिया इण्डिका, खण्ड-14, पृ. 159, खण्ड 15, पृ. 175
20. बनर्जी, जे. एन., रिलीजन इन आर्ट एण्ड आर्कियोलॉजी, पृ. 71-72
21. कार्पस इन्स्क्रिप्शनम इण्डिकेरम, खण्ड 4, पृ. 51
22. मध्यप्रदेश इतिहास परिषद की पत्रिका, अंक 3, पृ. 4
23. जोशी, नीलकण्ठ पुरुषोत्तम, प्राचीन भारतीय मूर्तिविज्ञान, बिहार राष्ट्र भाषा परिषद, पटना, 1977, पृ. 39
24. मिश्र, रमानाथ, भारतीय मूर्तिकला का इतिहास, ग्रन्थशिल्पी, दिल्ली, 2002 पृ. 110, मथुरा संग्रहालय सं. 15, 874; 15.800
25. गुप्त, पी. एल., गुप्त साम्राज्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 1965, पृ. 570
26. श्रीवास्तव, ब्रजभूषण, प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला, वाराणसी, 1994, पृ. 74
27. सिंह, ओ. पी., रिप्रैजेन्टेशन ऑफ अर्धनारीश्वर फार्म ऑफ शिव ऑन दी क्वाइन्स ऑफ कनिष्क, जरनल ऑफ दी न्युमिस्मैटिक सोसायटी ऑफ इंडिया।
28. पूर्वोक्त, जोशी, नीलपुरुषोत्तम, पृ. 39
29. रैमनेन्ट्स शोड अगेन्स्ट द रुइन्स, मार्ग, बाम्बे वाल्यूम XII, नं 2, मार्च 1959, आकृति, 11, पृ.18
30. तिवारी दुर्गानन्दन एवं गिरि करुणा, खजुराहो एवं ओसियाँ की संघाट प्रतिमायें, खजुराहो इन पर्सपैक्टिव, प्रोसीडिंग्स ऑफ दी यू. जी. सी. नेशनल सेमिनार ऑन आर्ट, खजुराहो, भोपाल, 1994, पृ. 202
31. शिवमूर्ति, सी., नटराज इन आर्ट, थॉट एण्ड लिटरेचर, पृ. 310, आकृति 187
32. मिश्र, इन्दुमती, प्रतिमा विज्ञान, वैष्णव पुराणों के आधार पर, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2000 (तृतीय संस्करण), पृ. 264
33. पूर्वोक्त, मिश्र, रमानाथ, पृ. 199
34. कंवरलाल, इम्मोर्टल खजुराहो, एशिया प्रेस, देहली, 1964, पृ. 219
35. वाजपेयी, के. डी., सागर थ्रू द एजेज, सागर, 1964, प्लेट 6, मिश्र रमानाथ, पूर्वोक्त, पृ. 265